वानिकी एवं जैव विविधता (Forestry & Bio-Diversity)

महाराणा प्रताप अध्ययन एवं जन कल्याण संस्थान, जयपुर वानिकी एवं जैव विविधता के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। संस्थान द्वारा राजस्थान के सीकर जिले में राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना का संचालन किया जा रहा है। इस परियोजना के तहत सीकर जिले के क्षेत्रीय प्रबंधन इकाई, सीकर, क्षेत्रीय प्रबंधन इकाई, फतेहपुर तथा क्षेत्रीय प्रबंधन इकाई लक्ष्मणगढ़ के चालीस गांवों में वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समितियों का गठन किया जा रहा है। इन समितियों के माध्यम से गांवों में वन विकास तथा जैव विविधता की विस्तृत परियोजना का संचालन किया जायेगा।

वन सुरक्षा एवं प्रबन्ध समिति की गठन बैठक का एक दृश्य

समितियां गांवों में जन सहभागिता के आधार पर भवन निर्माण, एनीकट, वर्षा जल संरक्षण कुण्ड, वर्षा जल रिचार्जिंग कूप, टंकी, चारागाह विकास, वन विकास, नर्सरी की गतिविधियों के साथ–साथ आय सृजन गतिविधियों एवं ग्राम विकास के कार्यों का संचालन करेगी। इन समितियों में महिलाओं की भागीदारी भी नियमानुसार 33 प्रतिशत सुनिश्चित की गई है।

ग्रामीणों से आधारभूत जानकारी प्राप्त करते संस्थान कार्मिक

वन आधारित उत्पादों के बाजार में विपणन की योजना में विशेष ध्यान दिया गया है। इसके अलावा क्षेत्रीय उत्पादों को तैयार करने उनके तकनीक विकास, कौशल उन्नयन आदि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। प्रशिक्षण स्थानीय स्तर पर आयोजित होंगे वही ग्रामीणों को राज्य में विभिन्न वानिकी विकास परियोजनाओं के एक्सपोजर विजिट पर ले जाया जायेगा। गांवों में स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जायेगा। वहीं ग्रामीणों के समूहों से जुड़ने से उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा तथा उनका सामाजिक सशक्तिकरण भी हो सकेगा।

परियोजना के तहत ग्रामीणों की समिति गांव में विकास आधारित कार्य जन सहभागिता के आधार पर करेगी जिसमें समूचे ग्राम वासियों की भागीदारी रहेगी वहीं वन विभाग एवं महाराणा प्रताप संस्थान इनकी कार्यों के सफल क्रियान्वयन में मदद करेगा।

संस्थान ग्रामीणों क्षमता संवर्द्धन, समिति सदस्यों के लिए प्रशिक्षण आय सृजन गतिविधियों का चयन कर ग्रामीणों को आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु विभिन्न प्रकार के रोजगार संवर्द्धन कार्यक्रमों का संचालन किया जायेगा। जिसके तहत इन गांवों में 120 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया जा रहा है और इन समूहों को निकटवर्ती बैंकों से जोड़ा जा रहा है ताकि इनमें आपसी समझ कायम हो और साथ मिलकर गरीबी से मुक्त हो सके। ग्रामीणों के कल्याण के लिए जनता की सहभागिता से पहली बार राजस्थान में आपणी योजना के बाद वनों के लिए जापान सरकार के सहयोग से इस योजना की रचना की गई है। इस योजना के क्रियान्वयन से सीकर जिले के 40 गांवों की स्थिति में परिवर्तन आयेगा और वन विकास और ग्राम विकास की संरचना का नया इतिहास लिखा जायेगा।

चारागाह विकास योजना का एक दृश्य

योजना के तहत बने एनीकट का एक दृश्य

योजना के तहत बने एनीकट का एक दृश्य

जल संरक्षण के तहत जोहड़ को गहरा करने के बाद भरे हुए पानी का एक दृश्य